International Journal of Enhanced Research in Educational Development
ISSN: 2320-8708, Vol. 3 Issue 6, November-December, 2015

विदेशी नरेशों के संस्कृत अभिलेखों में उल्लिखित राजनीतिक स्वरूप

प्रवीण दहिया

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय इतिहास में विदेशियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । विदेशी राजाओं ने समय–समय पर भारत पर आक्रमण किए एवं भारतीय समाज एवं संस्कृति को प्रभावित किया । इसी सन्दर्भ में विदेशी राजाओं ने भारत के विभिन्न भागों में अपने अभिलेख उत्कीर्ण करवाएं एवं इन अभिलेखों में धर्म, संस्कृति, शासन एवं राजनीति से सम्बन्धित विभिन्न बातों को उत्कीर्ण कराया ।

राजनीतिक परिचय

प्रायः उत्कीर्ण अभिलेखों में किसी न किसी वंश के शासक की विजय–यात्रा, युद्ध–गाथा एवं संधि सम्बन्धी उल्लेख प्राप्त होते हैं । प्रशस्तियों के अध्ययन से राजवंशों की वंश–परम्परा पर भी प्रकाश पड़ता है । इस परम्परा में भारतीयों के साथ–साथ विदेशी नरेशों के भारत में उपलब्ध अभिलेखों से हमें उनके साम्राज्य–विस्तार, प्रशासनिक व्यवस्था, विजय–अभियान एवं विदेशी नरेशों की उपाधियां जैसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक विषयों की जानकारी प्राप्त होती है ।

शोध–प्रविधि

विदेशी नरेशों जिनके अभिलेखों से हमें तत्कालीन राजनीतिक–व्यवस्था की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती हैं, उन्हें तीन मुख्य भागों में बांटा जा सकता है :–

1. तक्षशिला के शक – क्षत्रप
2. मथुरा के शक – क्षत्रप

कुषाण वंश (लगभग 300 वर्षो तक शासन किया)

साम्राज्य विस्तार

प्राचीन भारत का भूगोल जानने के लिए अभिलेखों से अत्याधिक सहायता मिलीती है । लेखों के प्राप्ति–स्थान से अनुक साम्राज्य की सीमा ज्ञात होती है तथा विभिन्न नरेशों की विजय–यात्रा का मार्ग, उनका राज्य–सीमा को निर्धारित करने में सहायता करता है । सर्व प्रथम, उत्तर–पश्चिम में गान्धार एवं तक्षशिला, जहां पर शक–क्षत्रप 'लियाका कुसुलका' का शासन था ।

दूसरा, प्रधान केन्द्र मथुरा था, जहां पर शकों की दूसरी शाखा का पता चलता है । इस शाखा के सदस्यों में महाक्षत्रप 'राजूबुल' एवं उसके पुत्र महाक्षत्रप 'शोडास' का नाम प्रमुख है । शक–क्षत्रपों की उपरोक्त दोनों शाखाओं ने गान्धार तक्षशिला एवं मथुरा पर शासन किया ।
कल्हण की राजतंरगिणी में कश्मीर पर शासन करने वाले तीन राजाओं का उल्लेख प्राप्त होता है जिसमें हुस्क (हुविष्क) जुस्क (वासिस्क) एवं कनिस्क के नाम प्रमुख हैं ।

कुषाणें के अभिलेख मथुरा, बिहार, अफगानिस्तान, पेशावर, रावलपिण्डी एवं बहावलपुर से प्राप्त होते हैं । जिसके आधार पर कुषाणों के अत्यन्त विशाल साम्राज्य का निर्धारण करने में सहायता मिलती है ।

पश्चिमी भारत में मालवा, सौराष्ट्र, गुजरात से विदेशी शासकों (कार्दमक वंश) के अभिलेख मिलती हैं ।

शासन–व्यवस्था

भारत में उत्कीर्ण शक एवं कुषाण कालीन विदेशी नरेशों के अभिलेखों से हमें तत्कालीन शासन–व्यवस्था का पता चलता है । प्रशस्ति उत्कीर्ण करते समय अथवा राजाज्ञा प्रसारित करते समय पदाधिकारियों के नाम एवं पदों का उल्लेख भी प्राप्त होता है ।

इसी प्रकार कुषाण शासक वासुदेव के वर्ष 74 के मथुरा पाषाण लेख में महादण्डनायक द्वारा दिए गए दान का उल्लेख प्राप्त होता है । दण्डनायक एवं महादण्डनायक ये दोनों पद कुषाणों की प्रशासनिक व्यवस्था में दो राजकीय वर्गों को प्रदर्शित करते हैं । डा0 यू0 एन0 घोषल के अनुसार महादण्डनायक पद का अर्थ मुख्य सेनाध्यक्ष से हैं । प्रिंसेप ने इसका अनुवाद, ''न्यायधीश या दण्डपाशिक'' के रूप में किया है । फ्लीट ने इसका अर्थ ''सेनाओं का महान अध्यक्ष'' के रूप में किया है । डी0 सी0 सरकार ने इसका अर्थ ''सेनाओं के प्रमुख'' के रूप में किया है । दण्डनायकों के सम्बन्ध में यह भी सम्भव है कि वे जागीरदारों के समान सामन्तवादी प्रमुख होते थे, जो कुषाण राजाओं के प्रति वफादार होते थे ।

''शकों ने अपने द्वारा जीते गए राज्यों में ग्रीक प्रशासकीय व्यवस्था को अपनाया । शकों द्वारा जीते गए प्रदेशों को प्रान्तों में 'राज्यपाल' के अधीन विभाजित किया गया । यह 'राज्यपाल' ही 'क्षत्रप' एवं 'महाक्षत्रप' कहे जाते थे । 'क्षत्रप' यह उपाधि ग्रीक 'क्षत्रपवन' का संस्कृत रूप है ।

इन क्षहरात क्षत्रप वंश एवं कार्दमक वंश के लेखों के अध्ययन से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि राजाओं की उपाधि क्षहरात क्षत्रप वंश होती थी ।

इस प्रकार शक एवं कुषाणकालीन अभिलेखों से हमें दण्डनायक, क्षत्रप, महाक्षत्रप, ग्रामिक, गंजवरेण (कोषाधिकारी) अमात्य एवं सचिव आदि अनेक अधिकारीगणों के नाम मिलते है । जो एक सशक्त एवं सुगठित प्रशासनिक व्यवस्था की ओर संकेत करते हैं ।

शक एवं कुषाणकालीन अभिलेखों में विदेशी नरेशों के नामों के साथ प्रयुक्त उपाधियों से उनकी स्थिति एवं शक्तिशाली अस्तित्व का पता चलता है । इन अभिलेखों में 'राजा' को स्वामि, क्षत्रप, महाक्षत्रप, महाराज, राजतिराज, दैवपुत्र, शाहि आदि उपाधियों से सम्बोधित किया गया है ।

निष्कर्ष

विदेशी नरेशों के संस्कृत अभिलेखों से प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था सशक्त एवं सुव्यवस्थित थी ।

सन्दर्भ ग्रंथ

पुरी, बी. एन. – इण्डिया अण्डर द कुषाणाज् । भारतीय विद्या भवन, मुंबई,1961
सरकार, डी. सी. – 'सलेक्ट इन्स्क्रिप्शन्स,भाग–1इण्डियन एपिग्राफिकल ग्लोसरी, मोती लाल बनारसी दास ।
सत्य श्रवा – 'द शकास इन इंडिया, प्रणव प्रकाशन दिल्ली 1993